रात्रि क्लास 23/11/68 ओम शांति शिवबाबा याद है?

बाप और दादा से बच्चे अनुभव ले रहे हैं। दादा से तो अनुभव मिल नहीं सकता। दादा कहते हैं भाइयों को। बड़ा भाई, छोटा भाई। बाप तो बाप ही है। तो अनुभव सुनाया होगा, यहाँ आये हैं बाप दादा से विश्व का मालिक बनने। कितना जबरदस्त नशा है। कोई समझ न सके तुम बच्चों के सिवाय। सभी दुःखों से पार तुम होते हो। बाकी थोड़ा समय है। फिर तो यह पुरानी दुनिया ही नहीं होगी। पुराने संबंध भी नहीं होंगे। फिर होगा नया संबंध। वह नया संबंध पूरा हो फिर पुराना होगा। अभी है दुख का संबंध। इनको कहा ही जाता है दुःखधाम। बच्चों को वर्ल्ड जॉग्राफी का ज्ञान मिला है, यह भी निश्चय हुआ आत्मा ही पार्ट बजाती है। यह भी समझ आई अपन को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तो सभी दुख दूर हो जावेंगे। सुख शुरू हो जावेंगे। बेहद के बाप से बेहद का सुख का वर्सा मिलता है। समझते भी हैं, फिर भी खुशी क्यों नहीं रहती? देह अभिमान में आ जाता(ते) है। माया की प्रवेशता होती। तुम्हारी है ही माया के साथ युद्ध। बाकी पाण्डव कोई युद्ध नहीं करते। कौरव युद्ध करते हैं। चीन से युद्ध हो गई थी ना। कोई समय हिन्दू हिन्दुओं से भी लड़ते थे। भारतवासी भारतवासियों से लड़ते थे। दुश्मन हो पड़ते थे। घर में फूट जब होती है तो फिर दूसरों को चांस मिल जाते हैं। तुमको तो वर्सा मिलता है। युद्ध की बात नहीं। गुल-2 होकर बाप से वर्सा लेते हो। कोई से भी दुश्मनी नहीं। यह ड्रामा है। तुम खेल कर रहे हो। माया का भी राज्य आता है ना। सारी रचयिता और रचना का ज्ञान तुम बच्चों में है। तुम्हीं बाप से वर्सा लेते हो। याद से पवित्र बनते हो। दैवी गुण धारण करने से ऊँच देवता बनते हो। अभी तो जाना है ना। तो इस दुनिया को ही भुलाना। यह दुनिया जैसे कि है नहीं। समझ में आता है यह सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी हम आत्माएँ चले जावेंगे अपने घर। अभ्यास करते-2 अशरीरी बन जाते हैं। आप मुये मर गई दुनिया। सच-2 पुरानी दुनिया खत्म होनी है, तो जैसे कि मर गये। इसलिए बाप कहते हैं तुम जो कुछ देखते हो यह सभी खत्म होना ही है। अपन को तुम आत्मा समझो। बस। फिर और संबंध ही नहीं रहना है। पुराना खलास हो जाना है। ऐसी-2 अपने साथ बातें करने से बहुत मौज में आते रहेंगे। हल्के हो जावेंगे। आत्माएँ कितनी छोटी हैं। आत्मा जैसी हल्की चीज़ कोई होगी ही नहीं। बच्चों ने अपन को, अपने बाप को जाना है। समझ मिली है हम सतयुग-त्रेता में थे, फिर द्वापर-कलियुग भक्ति में थे। अभी संगम पर हैं। जा रहे हैं। जिनको निश्चय हो जाता है वह फील करेंगे, हम प्रिंस बनने वाले हैं। नई दुनिया का प्रिंस। तुम भी यह बन(ने) आये हो। जिनको निश्चय है उनको यह समझाना है। तुम सच-2 कहते हो हम प्रिंस बनेंगे। ज्ञान है। वह भैंस की दृष्टांत देते हैं। बोलो मैं भैंस हूँ, भैंस हूँ। बच्चों को यह निश्चय है अभी हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे हैं। अंदर में सफाई चाहिए। कोई भी दुविधा अंदर न होनी चाहिए। कोई की ग्लानि न करनी चाहिए। कोई का अवगुण (गा)ना न चाहिए एक/दो में। अवगुण की बात किनारे जाकर करेंगे। उनको भी दबाया जाता है। किसकी ग्लानि करना ठीक नहीं है। बाप तो शिक्षा देते हैं। कोशिश कर अक के फूल न बनो। सर्विस का शो न दिखावेंगे तो दिल पर कैसे चढ़ेंगे। स्कूल में न पढ़ते हैं तो समझते हैं हम फेल हो जावेंगे वा थोड़ी मार्क्स से पास होंगे। क्षत्रिय घराणे को फेल कहेंगे। सबसे जास्ती खुशी तुम बच्चों को है, हम गॉड फादरली स्टूडेंट हैं। गॉड फादर बाप पढ़ाते हैं तो खुशी होनी चाहिए ना। स्मृति में रहना चाहिए; परंतु माया भी सभी को भुला देती है। जैसे बाप, टीचर, सद्गुरु का भी तुम फुल प्यार लेते हो। इन आँखों से न अपने शरीर को देखना है, न शरीरधारियों को देखना है। इस समय सिर्फ तुम बच्चों ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। तुमको इसलिए त्रिनेत्री कहा जाता है। अर्थात् ज्ञान का तीसरा नेत्र तुम बच्चों को मिलता है। बाकी उनको कहेंगे भक्ति का नेत्र। फिर भी बच्चों को कहते हैं बाप को याद करो, वर्से को याद करो, दैवीगुण धारण करो। आत्मा बुद्धि से याद की यात्रा कर रही है। याद करते-2 पाप कट जावेंगे और सतोप्रधान बन जावेंगे। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते।